रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज
डुमराँव - बक्सर

यान्त्रिक भाषा की अवधारणा :-

लिपि में स्थायित्व भले ही हो उसकी सबसे बड़ी सीमा यह थी कि भाषा का रूप उसमें निर्जीव हो जाता है। आज बहुत बार यह इच्छा होती है कि कालिदास, विद्यापति या सूर के मुख से ही हम उनकी कविता का पाठ सुन पाते, किन्तु लिपि उनकी वाणी को प्रस्तुत करने में अक्षम है। बुद्ध की शान्त, स्निग्ध वाणी की हम कल्पना ही कर सकते हैं, अनुभव नहीं। शंकराचार्य के मुख से मन्दाकिनी की धारा के समान संस्कृत का प्रभावशाली प्रवाह कैसे निःसृत होता होगा? भाषा की इस निर्जीवता को दूर करने के प्रयास से और ध्वनि को यथावत् अंकित करने की कामना से यान्त्रिक भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। आज नाना प्रकार के रिकार्डिंग यन्त्रों के द्वारा हम किसी की ध्वनि को अनन्त काल तक के लिए सुरक्षित रख सकते हैं। महात्मा गाँधी को दिवगत हुए बहुत वर्ष हो गये, किन्तु आज भी उनकी वाणी टेपरिकार्डर आदि की सहायता से उसी रूप में हमारे कानों में गूँज उठती है जिस रूप में उनके जीवन-काल में गूँजती थी।

यान्त्रिक भाषा ने कई रूप धारण किये है, जैसे, पहले ध्वनि की रक्षा और स्थायित्व का काम ग्रामोफोन - रिकार्ड से लिया जाता था। अब वह काम टेप - रिकार्डर और काम्पैक्ट डिस्क से भी लिया

जाने लगा है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक वक्ता की ध्वनि को पहुँचाने का काम टेलीफोन करता है। पहले यह काम लिपि के द्वारा ही सम्भव था। आज तो लिपि भी टेलीप्रिन्टर, कम्प्यूटर, फैक्स आदि की सहायता से भेजी जा सकती है। तार से लिखित भाषा का रूप सामने आता था तो टेलीफोन से वाचिक भाषा का, एक नेत्र का विषय था तो दूसरा श्रोत्र का। टेलीविजन और चित्रपट से दोनों का समन्वय हो गया, हम रूप और शब्द दोनों को एक साथ ग्रहण कर सकते हैं; अर्थात् एक साथ नेत्र और श्रोत दोनों की तृप्ति हो जाती है। रेडियो ने तार का बन्धन भी हटा दिया और उसका उद्देश्य केवल संवाद-प्रेषण ही नहीं, मनोरंजन भी हो गया।

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में कम्प्यूटर के बहुआयामी विकास के साथ भाषा को भी एक नयी दिशा मिली है। कम्प्यूटर की सहायता से लिखित भाषा का सम्प्रेषण तो सहज हुआ ही है, लिप्यन्तरण की प्रक्रिया भी बहुत आसानी से हो जाती है। भाषा के क्षेत्र में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है, वह है यन्त्र द्वारा अनुवाद करने का प्रयास। इसमें कुछ सफलता तो मिली है पर वह अत्यन्त सरल वाक्यों के सन्दर्भ में है। इस दिशा में कोई सार्थक सफलता प्राप्त करने की राह में अनेक प्रकार की बाधाएँ हैं जिनमें सर्वप्रमुख है भाषा का जीवन्त

स्पन्द-युक्त होना। प्रत्येक भाषा की अन्तर्निहित नियमावली अलग-अलग होती है। इतना ही नहीं हर समाज की भाषा उसकी संस्कृति, इतिहास और भूगोल से भी प्रभावित होती है। इतना ही नहीं, हर समाज की भाषा उसकी संस्कृति देशकाल वातावरण पर निर्भर होती है। उच्चरित भाषा में कभु द्वारा अर्थ पूरी तरह बदल जाता है और फिर प्रत्येक भाषा के मुहावरे भी होते हैं जिनका शब्दानुवाद करने मात्र से काम नहीं चलता। इस प्रकार यन्त्रानुवाद कम्प्यूटर-वैज्ञानिकों के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए कम्प्यूटर-विशेषज्ञों के साथ भाषावैज्ञानियों, मानव-विज्ञानियों, समाज विज्ञानियों, मनोविज्ञानियों आदि को मिलकर काम करना होगा। फिर भी एक भाषा का दूसरी भाषा में पूर्ण अनुवाद हो सकेगा यह कष्ट-कल्पना प्रतीत होती है, क्योंकि प्रत्येक भाषा अपने समाज का दर्पण होती है और रंग बदल देने से मनुष्य की प्रकृति तो नहीं बदलती है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव।